पवित्र आत्मा का उतरना सेवकाई के लिए अभिषेक और सामर्थ्य है

फ्रैंकलीन द्वारा शिक्षण सामग्री

हम सब प्रभु के सेवक हैं : 1 पतरस 2:9 कुरिन्थियों 5:18 प्रकाशितवाक्य 5:10

सेवा करने के लिए नियुक्त : निर्गमन 29:1, 7; 30:22-31; लैव्यव्यवस्था 8:10-12, 30

आत्मा उतरा और भविष्यवाणी की :

1. गिनती 11:17, 25-29 — एलदाद और मेदाद "भला होता कि यहोवा..."
2. व्यवस्थाविवरण 34:9 — यहोशू आत्मा से परिपूर्ण था
3. न्यायियों 3:10 — ओत्नीएल
4. न्यायियों 6:34 — गिदोन
5. न्यायियों 14:6; 15:14 — शिमशोन
6. 1 शमूएल 10:1, 6-12; 19:20-23 — शाऊल
7. 1 शमूएल 16:13; — दाऊद

आत्मा से परिपूर्ण हुए और भविष्यवाणी की :

1.	लूका 1:15, 17	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला	"परिपूर्ण हुआ"
2.	लूका 1:35	मरियम	"उतरेगा"
3.	लूका 1:41-42	इलीशिबा	"परिपूर्ण"
4.	लूका 1:67	जकरयाह	"परिपूर्ण हुआ और भविष्यवाणी करने लगा"

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का कथन लूका 3:16

पवित्र आत्मा के साथ यीशु का अनुभव : लूका 3:21-22; 4:1, 14, 18

पवित्र आत्मा पर यीशु की शिक्षा यूहन्ना 7:37-39 14:12-18

पवित्र आत्मा हममें/ नया जन्म यूहन्ना 20:22 cp. लूका 24:45

पवित्र आत्मा का उतरना लूका 24:49-51 and प्रेरितों के काम 1:1-9; 2:1-4

परिणाम और उसे समझाया जाना प्रेरितों के काम 2:14-18, 33, 38-39 / 4:8,31,33 / 6:3, 5, 8

पवित्र आत्मा का अन्य लोगों पर उतरना प्रेरितों के काम 8:5-18 / 9:17 / 10:44 / 19:1-6

पवित्र आत्मा को प्राप्त करना प्रेरितों के काम 2:38-39; लूका 11:11-13; इफिसियों 5:18; 6:18

भाषाएँ : (1) आपकी नहीं बल्कि अन्य : 1 कुरिन्थियों14:20-22 (2) प्रार्थना की भाषा : 1 कुरिन्थियों13:1; 14:2,4, 14-15; उन्नत करती है : यहूदा 20; इफिसियों 6:17-18 वचन के लिए। (3) भविष्यवाणी : 1 कुरिन्थियों14:5, 26-28

पवित्र आत्मा – उसकी सेवकाई और अभिषेक

फ्रैंकलीन के नोट्स

उत्पत्ति 1:2 पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा **परमेश्वर का आत्मा** जल के **ऊपर मण्डराता** था।

- "मण्डराता" – कोमलता से घूमना, जैसे चील अपने बच्चों पर मंडराती है (व्यवस्थाविवरण 32:11)।
- बहुत आरम्भ से ही परमेश्वर का आत्मा **बदलाव** लाने के लिए मंडराता है
- वह मंडराता है कि बेडौल में से **आकार और सुन्दरता** को लेकर आए
- वह मंडराता है कि खालीपन में से **उद्देश्य और महत्त्वता** को लेकर आए। सुनसान को अपने **आत्मा** से भर दे।
- वह मंडराता है कि अंधकार, में से **ज्योति**, **सत्य और धार्मिकता** को लेकर आए (देखें 1 पतरस 2:9)
- वह मंडराता है कि वह परमेश्वर के उद्देश्य को उसकी सृष्टि में पूरा करे। और आपके जीवन में भी!

और आज उसकी यह सेवा है और ऐसा हर उस स्थान पर होता है जहाँ वह मंडराता है और परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए **उतरता** है। यही तो वह हममें से प्रत्येक के जीवन में कर रहा है।

पवित्र आत्मा का उतरना सेवकाई के लिए अभिषेक है।

हमारे लिए पवित्र आत्मा का किसी व्यक्ति **"में"** होना और उसका किसी व्यक्ति पर **"उतरना"** के फर्क को समझना बहुत ज़रूरी है।

❖ सेवकाई के लिए "अलग किए जाने या पवित्र करने" हेतु अभिषेक

निर्गमन 29:1 "उन्हें पवित्र करने को जो काम तुझे उन के साथ करना है कि वे मेरे लिये याजक का काम करें, वह यह है: . . . (7) तब **अभिषेक का तेल** ले उसके सिर **पर** डालकर उसका **अभिषेक करना।**

निर्गमन 30:22-31 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, (23)"तू उत्तम से उत्तम सुगन्धद्रव्य ले, ... (25) उनसे **अभिषेक का पवित्र तेल**, अर्थात् गन्धी की रीति से तैयार किया हुआ सुगन्धित तेल बनवाना; यह अभिषेक का पवित्र तेल ठहरे। (26) और उससे मिलापवाले तम्बू का, और साक्षीपत्र के सन्दूक का, (27)और सारे सामान समेत मेज का, और सामान समेत दीवट का, और धूपवेदी का, (28)और सारे सामान समेत होमवेदी का, और पाए समेत हौदी का **अभिषेक करना**, (29)और उनको **पवित्र करना** (पवित्र कार्य के लिए अलग करना, 6932), जिससे वे **परमपवित्र** ठहरें (6942); और जो कुछ उनसे छू जाएगा वह **पवित्र** हो जाएगा। (30)फिर **हारून का**

उसके पुत्रों के साथ अभिषेक करना, और **इस प्रकार उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने के लिये पवित्र करना** (6942)। (एक महत्वपूर्ण क्षण) (31)और इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना, 'यह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल होगा।

- 6942 स्ट्रोंग कान्कॉर्डन्स की शब्द संख्या है जो यह बताता है कि इन सभी शब्दों का एक ही मूल इब्रानी शब्द है।

लैव्यव्यवस्था 8:10-12 तब मूसा ने **अभिषेक का तेल** लेकर निवास का और जो कुछ उसमें था उन सब का भी अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया। [11]और उस तेल में से कुछ उसने वेदी पर सात बार छिड़का, और कुल सामान समेत वेदी का और पाए समेत हौदी का अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया। [12]और उसने **अभिषेक के तेल** में से कुछ हारून के सिर पर डालकर उसका अभिषेक करके उसे पवित्र किया। ... [30]तब मूसा ने अभिषेक के तेल **और** वेदी पर के **लहू**, दोनों में से कुछ लेकर **हारून** और उसके वस्त्रों पर, **और उसके पुत्रों** और उनके वस्त्रों पर भी छिड़का; और उसने वस्त्रों **समेत हारून को भी पवित्र किया।**

- परमेश्वर उन्हें **चुनता है** जो उसके याजक होंगे। उन्हें पवित्र करने के लिए **बलिदान का लहू** और सिर पर उंडेलने को **अभिषेक का तेल** आवश्यक है।
- हारून हमारे महायाजक अर्थात यीशु मसीह को दर्शाता है और नए नियम का **हर नया जन्म पाया हुआ विश्वासी** उसके पुत्रों को दर्शाते हैं। **हर** विश्वासी याजक और सेवक है। (2 कुरिन्थियों 5:18; 1 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 5:10-11)
- यह शिक्षा देने वाला पवित्र आत्मा है जो **उन पर** उतरता है जो प्रभु की सेवा और उसका कार्य करेंगे, और यह करने के लिए वह उन्हें अधिकार और सामर्थ्य देता है, जैसा यह वचन कहता है :
  1 कुरिन्थियों 10:11 परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, **दृष्टान्त** की रीति पर थीं; और **वे हमारी चेतावनी के लिये** जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।

❖ आत्मा उतरा और भविष्यवाणी की

गिनती 11:16-29 मूसा को लोगों की चरवाही करने के लिए सहायता चाहिए थी

यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएली पुरनियों में से सत्तर ऐसे पुरुष मेरे पास इकट्ठे कर, जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के पुरनिये और उनके सरदार हैं; और मिलापवाले तम्बू के पास ले आ कि वे तेरे साथ यहाँ खड़े हों। (17) तब मैं उतरकर तुझ से वहाँ बातें करूँगा; और **जो आत्मा तुझ में है उसमें से कुछ लेकर उनमें समवाऊँगा; और वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाए रहेंगे**, और तुझे उसको अकेले उठाना न पड़ेगा। (24) तब मूसा ने ... उनके पुरनियों में से सत्तर पुरुष इकट्ठा करके तम्बू के चारों ओर खड़े किए। (25) तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें कीं, और जो आत्मा उसमें था उसमें से लेकर उन सत्तर पुरनियों में समवा दिया; और जब वह **आत्मा उनमें आया** तब **वे नबूवत करने लगे।** परन्तु फिर और कभी न की। (26) परन्तु दो मनुष्य

छावनी में रह गए थे, जिनमें से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी **आत्मा आया**; ये भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिये गये थे, पर तम्बू के पास न गए थे, और वे छावनी ही में नबूवत करने लगे। (27) तब किसी जवान ने दौड़ कर मूसा को बतलाया, कि एलदाद और मेदाद छावनी में **नबूवत कर** रहे हैं। (एक महत्वपूर्ण क्षण) (28) तब नून का पुत्र यहोशू, जो मूसा का सेवक और उसके चुने हुए वीरों में से था, उसने मूसा से कहा, "हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे।"

सेवा करने के लिए सीमित करनेवाली और ईर्ष्या करनेवाली एक धार्मिक आत्मा, जो केवल आराधना स्थल तक ही उसे सीमित रखती है। इसी रवैये ने आज सुसमाचार के कार्य को अपंग बना दिया है।

(29) मूसा ने उससे कहा, "क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की **सारी प्रजा के लोग नबी होते,** और यहोवा अपना आत्मा **उन सभों में** समवा देता!"

मूसा परमेश्वर के हृदय को व्यक्त कर रहा था

व्यवस्थाविवरण 34:9 और नून का पुत्र **यहोशू** बुद्धिमानी की **आत्मा से परिपूर्ण था**, क्योंकि मूसा ने **अपने हाथ उस पर रखे थे**; और इस्राएली उस आज्ञा के अनुसार जो यहोवा ने मूसा को दी थी उसकी मानते रहे।

- हाथों को रखने के द्वारा आत्मा और अधिकार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सौंपा गया।

❖ इस्राएल के लिए परमेश्वर के न्यायी :

न्यायियों 3:9-10 उसमें (ओत्नीएल में) यहोवा का आत्मा समाया, और वह इस्राएलियों का न्यायी बन गया

न्यायियों 6:34 तब यहोवा का आत्मा गिदोन में समाया (एक महत्वपूर्ण क्षण)

न्यायियों 14:6 तब यहोवा का आत्मा उस **पर** (शिमशोन पर) बल से उतरा

न्यायियों 15:14 तब यहोवा का आत्मा उस **पर** बल से उतरा, और उसकी बाँहों की रस्सियाँ आग में जले हुए सन के समान हो गईं, और उसके हाथों के बंधन मानों गलकर टूट पड़े।

❖ शाऊल का राजा के रूप में सेवा के लिए अभिषेक

1 शमूएल 10:1 तब शमूएल ने एक कुप्पी तेल लेकर उसके सिर **पर** उंडेला, और उसे चूमकर कहा, "क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा **अभिषेक किया** है? **(5)** तब तू परमेश्वर के पहाड़ पर पहुँचेगा जहाँ पलिश्तियों की चौकी है; और जब तू वहाँ नगर में प्रवेश करे, तब नबियों का एक दल ऊँचे स्थान से उतरता हुआ तुझे मिलेगा; और उनके आगे सितार, डफ, बाँसुली, और वीणा होंगे; और वे नबूवत करते होंगे। **(6)** यहोवा का आत्मा तुझ **पर** बल से उतरेगा, **और तू उनके साथ होकर नबूवत करने लगेगा, और तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जाएगा।** (इब्रानी : नबूवत – प्रेरित होकर बोलना या गाना)

(9) ज्योंही उसने शमूएल के पास से जाने को पीठ फेरी त्योंही परमेश्वर ने उसके मन को परिवर्तित किया; और वे सब चिह्न उसी दिन प्रगट हुए। **(10)** जब वे उधर उस पहाड़ के पास आए, तब नबियों का एक दल उसको मिला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा, और वह उनके बीच में नबूवत करने लगा। **(11)** जब उन सभों ने जो उसे पहले से जानते थे यह देखा कि वह नबियों के बीच में नबूवत कर रहा है, तब आपस में कहने लगे, "कीश के पुत्र को यह क्या हुआ? क्या शाऊल भी नबियों में का है?" वह **परिवर्तित हो गया**, इसे देखा गया, और वह कार्य के लिए अलग किया गया था।

(एक महत्वपूर्ण क्षण)

❖ राजा शाऊल का आज्ञा उल्लंघन (1 शमूएल 15)

1 शमूएल 15:22-23 शमूएल ने कहा, "क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, **मानना** तो बलि चढ़ाने से, और **कान लगाना** मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। देख, **बलवा करना** और **भावी कहनेवालों से** पूछना एक ही समान **पाप है**, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिये उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।

- प्रेरितों के काम 5:32 पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो **उसकी आज्ञा** मानते हैं।
- उसने अनंत जीवन नहीं खोया — उसने अपना पद और अभिषेक खो दिया; और इस प्रकार जो भी उस पद के लिए चाहिए अभिषेक का उद्देश्य उसे पूरा करने से है। (भजन 89:30-34)

❖ शाऊल की आज्ञा उल्लंघन का परिणाम

प्रेरितों के काम 13:22 फिर उसे अलग करके दाऊद को उनका राजा बनाया; जिसके विषय में उसने गवाही दी, 'मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।'

1 शमूएल 16:13 दाऊद का अभिषेक

तब शमूएल ने अपना **तेल** का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका **अभिषेक किया**; और उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा।

(एक महत्वपूर्ण क्षण)

पद 14 यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया

यहोवा का आत्मा शाऊल पर से **उठ गया**, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा। (देखें, मत्ती 18:34)

- अभिषेक परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने में सशक्त बनाने के लिए है।
- शाऊल परमेश्वर की **आज्ञा नहीं मान रहा था : बलवा करना** — परमेश्वर को "न" कहना। **हठ करना** — "मैं इसे अपने तरीके से करूँगा।" अतः यह दुष्ट आत्मा है।

- "यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा" क्योंकि शाऊल परमेश्वर का था और दुष्ट आत्मा उसे छू भी नहीं सकती थी जब तक परमेश्वर इसकी अनुमति नहीं देता। उसने अनुमति दी।

  (देखें मत्ती 18:34)

❖ एक दिलचस्प दृश्य

1 शमूएल 19:20-24 तब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे; और जब शाऊल के दूतों ने नबियों के दल को नबूवत करते हुए, और शमूएल को उनकी प्रधानता करते हुए देखा, तब **परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा,** और वे भी नबूवत करने लगे। (21) इसका समाचार पाकर शाऊल ने और दूत भेजे, और वे भी **नबूवत करने** लगे। फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी **नबूवत करने** लगे। (22) तब **वह आप ही** रामा को चला ...और परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा और वह रामा के नबायोत* को पहुँचने तक **नबूवत करता** हुआ चला गया। (24) और उसने भी अपने वस्त्र उतारे, और शमूएल के सामने नबूवत करने लगा, और भूमि पर गिरकर दिन और रात नंगा पड़ा रहा। इस कारण से यह कहावत चली, "क्या शाऊल भी नबियों में से है?"

- **हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए** कि जो हम परख रहे हैं क्या वह परमेश्वर **की ओर से** है या **नहीं**। क्योंकि यह बहुत अजीब, दीन करनेवाली और शर्मिंदा करने वाली बात है।

- यहाँ नबूवत का अर्थ केवल "भविष्य की बातों को बोलना" से बढ़कर है क्योंकि इसने उन्हें वह कार्य को पूरा करने से रोका। परमेश्वर किसी भी कार्य को रोक सकता है।

  भजन 105:15 "मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ, और न मेरे नबियों की हानि करो!"

  अय्यूब 5:12 वह धूर्त लोगों की कल्पनाएँ व्यर्थ कर देता है, और उनके हाथों से कुछ भी बन नहीं पड़ता।

  भजन 33:10 यहोवा जाति-जाति की युक्ति को व्यर्थ कर देता है; वह देश देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है।

  आप अपने कार्य स्थल पर या जहाँ भी आप हों, अपने आपको परमेश्वर के ऐसे दूत अर्थात उसके मिशनरी के रूप में देखें, जो प्रतिदिन अपने मिशन क्षेत्र में हैं।

आज हमारे लिए आत्मा की भावी प्रतिज्ञा :

योएल 2:28-29 "उन बातों के **बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा**; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ **भविष्यद्वाणी करेंगी**, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर **भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा।**

-------- नया नियम --------

पवित्र आत्मा को इन रूप में जाना गया :

रोमियों 8:9 . . .परमेश्वर का आत्मा

1 पतरस 1:11 . . . मसीह का आत्मा

प्रेरितों के काम 16:7 . . . यीशु के आत्मा

फिलिप्पियों 1:19 . . . यीशु मसीह की आत्मा

❖ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का कथन

लूका 3:16 यूहन्ना ने उन सबसे कहा, "मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु वह आनेवाला है जो मुझ से शक्तिमान है; मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूतों का बन्ध खोल सकूँ; **वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।**

- मूल यूनानी भाषा में शब्द बपतिस्मा का अर्थ है — सौंपना; डुबाना
- इस संदर्भ में "आग" का अभिप्राय उत्साह, सशक्त करने और आग के द्वारा शुद्ध किए जाने से हो सकता है जो पवित्र आत्मा के साथ आते हैं।

  इब्रानियों 1:7 और स्वर्गदूतों के विषय में यह कहता है, "वह अपने दूतों को पवन (अक्षरशः आत्माएं), और **अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है।**"

  सेवक से अभिप्राय उसके स्वर्गदूत हो सकते हैं, या हम, या दोनों। "पिन्तेकुस्त के दिन वह "आग की लिपटें" थीं जो प्रत्येक पर आईं और उसने उन सबको बदल दिया और सशक्त किया तथा उत्साह से भर दिया। वे जो ऊपरी कक्ष में डरकर छिपे थे, अब बाहर सड़कों पर जाकर पूरे साहस के साथ कहने लगे., "अत: अब इस्राएल का सारा घराना निश्चित रूप से जान ले कि परमेश्वर ने उसी **यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया,** प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" प्रेरितों के काम 2:36

❖ पवित्र आत्मा के साथ यीशु का अनुभव :

यीशु 30 वर्ष का था; वह अपने सांसारिक पिता के प्रति सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा। अब उसके लिए वह समय था कि वह अपने सेवा कार्य में प्रवेश करे :

लूका 3:21-22 जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु भी **बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा** था, तो आकाश खुल गया, (22) और **पवित्र आत्मा** शारीरिक रूप में कबूतर के समान उस **पर** उतरा, और यह आकाशवाणी हुई : "तू मेरा प्रिय **पुत्र** है, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।"

- उसका बपतिस्मा यह प्रदर्शित करने की क्रिया थी कि वह अपने पुराने जीवन के लिए मर गया और अब अपने स्वर्गीय पिता की सेवा और आज्ञा मानने के लिए **समर्पित** है। इसलिए पवित्र आत्मा का **अभिषेक** उस **पर** हुआ। **(एक महत्वपूर्ण क्षण)**

लूका 4:1-2, फिर यीशु **पवित्र आत्मा से भरा हुआ**, यरदन से **लौटा**; और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा; (2)और शैतान उसकी परीक्षा करता रहा।

- यीशु का "पवित्र आत्मा में **बपतिस्मा" हुआ** और फिर उसे पवित्र आत्मा से **परिपूर्ण** बताया गया, इस प्रकार यह एक ही घटना को दर्शाता है।
- जहां **प्रथम आदम** परीक्षा में विफल हुआ वहां **अन्तिम आदम** (1कुरिन्थियों15:45) परमेश्वर के वचन को मानकर और उसका उल्लेख करके परीक्षा का सामना किया।
  (इब्रानियों 4:15 . . . महायाजक हमारे समान परखा गया)

परिणाम :

लूका 4:14 फिर यीशु आत्मा की **सामर्थ्य** से भरा हुआ गलील को लौटा, और उसकी चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई।

- परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और शैतान की प्रलोभनों को “न” कहना — आपको **पवित्र आत्मा के सामर्थ्य** में स्थापित करता है। प्रेरितों के काम 5:32

❖ यीशु समझाते हैं कि पवित्र आत्मा उन पर क्यों है :

लूका 4:18-19 “प्रभु का आत्मा मुझ **पर** है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये **मेरा अभिषेक किया है,** और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, (19) और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।”

- यीशु ने अब अपना कार्य हमें सौंपा है : यूहन्ना 17:18 और 20:21 जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।” परमेश्वर ने उसे भेजा — पवित्र आत्मा के उस पर उतरने के साथ अभिषिक्त और सामर्थी।
- पवित्र आत्मा का मुख्य उद्देश्य किसी व्यक्ति **पर** उतरना और उसे **सशक्त करना है** — कि वह एक मिशनरी/ एक गवाह/ उसका सेवक हो।

❖ पवित्र आत्मा पर यीशु की शिक्षा

यूहन्ना 7:37-39 पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, “**यदि कोई** प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। **जो** मुझ पर **विश्वास करेगा**, जैसा पवित्रशास्त्र (यशायाह 44:3) में आया है, ‘उसके हृदय में से **जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी**।”

- जो विश्वास करेगा — आप जितना अधिक पीएंगे, आप में से दूसरों के लिए उतना अधिक जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी। पवित्र आत्मा का आना/ अभिषेक होना हर उस व्यक्ति के लिए है जो उसके पास आता/ उस जल को पीता/ उसकी आज्ञा मानता और उसकी सेवा करता है।

उसने यह वचन पवित्र **आत्मा** के विषय में कहा, जिसे **उस पर विश्वास करनेवाले** पाने पर थे; क्योंकि **आत्मा अब तक न उतरा था,** क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था। (यशायाह 44:3; 55:1; 58:11)

- अब तक न उतरा था? हमने पुराने नियम से देखा कि आत्मा बहुत लोगों पर उतरा था। इसका क्या अर्थ है, "अब तक न उतरा था?"

यूहन्ना 16:7 तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरा जाना **तुम्हारे लिये अच्छा है**, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह **सहायक** तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु **यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा।** एक प्रतिज्ञा।

- यीशु को पहले क्रूस पर पाप की समस्या से निपटना था (2 कुरिन्थियों 5:21) और फिर, इससे पहले वह पवित्र आत्मा को किसी **"में"** आने के लिए भेजे, उसे महिमान्वित होना था। पवित्र आत्मा पापमय मंदिर में नहीं वास करता/बसता। पाप को हटाना ज़रूरी है।

यूहन्ना 16:13-15 परन्तु **जब** वह अर्थात् सत्य का आत्मा **आएगा**, तो **तुम्हें** सब **सत्य का मार्ग बताएगा** … और **आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।** (14) **वह मेरी महिमा करेगा,** क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

(देखें 1 कुरिन्थियों 6:19-20)

यूहन्ना 14:26 परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से **भेजेगा**, **वह तुम्हें** सब बातें **सिखाएगा**, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब **तुम्हें स्मरण कराएगा।**

- हमें शिक्षक की बड़ी ज़रूरत है!
- हमें पवित्र आत्मा के साथ एक घनिष्ठ सम्बन्ध बनाना चाहिए।
- हमें उसकी आवाज़ को सुनना चाहिए और ध्यान धरके सुनना सीखना चाहिए।

यूहन्ना 15:26-27 परन्तु **जब** वह **सहायक आएगा**, जिसे **मैं तुम्हारे पास** पिता की ओर से **भेजूँगा**, अर्थात् **सत्य** का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो **वह मेरी गवाही देगा**; (27) और **तुम भी मेरे गवाह हो** क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।

- यदि आप "आत्मा के अनुसार" चलते हो (गलातियों 5:16) तो आप केवल सच बोलेंगे, और यीशु के बारे में निरंतर गवाही देंगे।

- नया नियम पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा गया — उन लोगों के द्वारा जो आरम्भ से यीशु के साथ थे, और जिन्होंने सच बोला। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा (श्वास या हवा) से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है (2 तीमुथियुस 3:16)।

यूहन्ना 14:12 “मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्‍वास रखता है, **ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा**, वरन् इनसे भी **बड़े काम** करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।

- इस जगत को पवित्र आत्मा से भरे ऐसे पुरुष और स्त्रियों की ज़रूरत है जो उसकी आवाज़ सुनते हुए, उसकी आज्ञा मानते हुए, उसकी गवाही देते, उसके कार्य को करते, आश्चर्यकर्म को करते हुए यीशु द्वारा लूका 4:18 में स्थापित सेवा को पूरा करें।

यूहन्ना 14:16-17 मैं पिता से विनती करूँगा, और **वह तुम्हें** एक और सहायक **देगा** कि वह **सर्वदा तुम्हारे साथ** रहे। (17) अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह **तुम्हारे साथ** रहता है, और वह **तुम में होगा**।

- पवित्र आत्मा शिष्यों **"में " नहीं था!**
- उनका नया जन्म **नहीं** हुआ था! पाप को अब तक हटाया नहीं गया था।
- उनके सब प्रश्नों का उत्तर देता है, जैसे : “वह यह क्या कह रहा है?”

1 कुरिन्थियों 2:14 **परन्तु शारीरिक मनुष्य** परमेश्‍वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।

- जब तक कि किसी व्यक्ति का नया जन्म नहीं होता और पवित्र आत्मा उस **“में”** नहीं होता, वह “स्वाभाविक मनुष्य” है और आत्मिक बातों को नहीं समझेगा।

तो फिर, चेलों ने नया जन्म कब पाया?

❖ उत्तर : पुनरुत्थान के दिन

यूहन्ना 20:21-22 यीशु ने फिर उनसे कहा, “तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, **वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।”**

- पिता ने पुत्र को कैसे भेजा?
    - आत्मा से जन्मा
    - पवित्र आत्मा उतरने के द्वारा अभिषिक्त और सामर्थी

पद 22 यह कहकर **उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, “पवित्र आत्मा लो।”**

- **“लो”** (ओरिस्ट, कर्तृवाचक, आदेशात्मक क्रिया है), एक आज्ञा जिसे वहीं उसी समय करना है।
- **पाप क्षमा हुए और मिटा दिए गए, अब** पवित्र आत्मा विश्वासी **में** वास कर सकता है।
- बाइबल में हम और कहाँ परमेश्वर को मनुष्य पर अपना श्वास फूंकते हुए पाते है?

(आदम : उत्पत्ति 2:7)

- चेलों ने **पुनरुत्थान के दिन नया जन्म पाया** था।

❖ लूका द्वारा लिखे गए पुनरुत्थान दिन के विवरण से तुलना करें।

लूका 24:45 तब उस ने पवित्रशास्त्र बूझने के लिये **उनकी समझ खोल दी**

- उनकी बुद्धि जब खुली जब पवित्र आत्मा **उन में** आया :
    - फिर उनका **नया जन्म** हुआ
    - अब उनके पास आत्मिक समझ है।
    - यिर्मयाह 31:33-34; यहेजकेल 36:26 में भी इस विषय में कहा गया है

यिर्मयाह 31:33-34 वह **वाचा** यह है : मैं अपनी व्यवस्था उनके मन **में** समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, (34) … सब के सब **मेरा ज्ञान रखेंगे**; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा।

यहेजकेल 36:26-27 मैं **तुम को नया मन दूँगा**, और **तुम्हारे भीतर नई आत्मा** उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूँगा। (27) मैं **अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर** ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।

❖ प्रत्येक विश्वासी **"में"** पवित्र आत्मा है

रोमियों 8:9-11 परन्तु जब **कि <u>परमेश्वर</u> का आत्मा तुम में बसता है,** तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में <u>मसीह का आत्मा</u> नहीं तो वह उसका जन नहीं। (10) यदि <u>मसीह</u> **तुम में** है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। (11) यदि <u>उसी का आत्मा</u> जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा।

❖ उन **पर** पवित्र आत्मा

लूका 24:47 और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का **प्रचार**, उसी के नाम से किया जाएगा।

उन्हें महान आज्ञा दी गई … परन्तु :

लूका 24:49 और देखो, जिसकी **प्रतिज्ञा** मेरे पिता ने की है, मैं उसको **तुम पर** उतारूँगा और **जब तक** स्वर्ग से **सामर्थ्य** न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।

- उनका नया जन्म हुआ

- उन्हें महान आज्ञा दी गई ... परन्तु
- वे सेवकाई के लिए तैयार नहीं थे
- उन पर पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक नहीं हुआ था/न उन्होंने सामर्थ्य प्राप्त की थी

प्रेरितों के काम पुस्तक किसने लिखी? – डॉ. लूका – आइए हम प्रेरितों के काम को देखें और उसे पढ़ें।

प्रेरितों के काम 1:1-5 हे थियुफिलुस, मैं ने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी जो यीशु आरम्भ से करता और सिखाता रहा, (2) उस दिन तक जब तक वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया। (3) उसने दु:ख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और **चालीस दिन** तक वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा।

❖ **चालीस दिन का बाइबल स्कूल!** वे यीशु के साथ तीन साल तक थे, लेकिन वे अब समझ पाए थे क्योंकि पवित्र आत्मा उन **में** था।

(4) और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस **प्रतिज्ञा** के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। (5) क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तु**म पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।**

प्रेरितों के काम 1:8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम **पर** आएगा तब तुम **सामर्थ्य** पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

❖ परिणाम और व्याख्या

प्रेरितों के काम 2:1-13 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। (2) एकाएक आकाश से बड़ी **आँधी** की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। (3) और उन्हें **आग** की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। (4) वे सब पवित्र आत्मा से **भर गए**, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे **अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।** (5) आकाश के नीचे की **हर एक जाति** में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रह रहे थे। (6) जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये **मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।** (7) वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, "देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं? (8) तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी अपनी जन्म-भूमि की भाषा सुनता है? (11) अर्थात् यहूदी और यहूदी मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी हैं, परन्तु **अपनी-अपनी भाषा में** उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।"

❖ तीन प्रकार की भाषाएँ

1. ऐसी भाषा में बोलने का चमत्कार जिसे आप जानते नहीं हैं

1 कुरिन्थियों 14:20-22 हे भाइयो, तुम समझ में बालक न बनो : बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बनो। व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है, "**मैं अपरिचित भाषा बोलनेवालों के द्वारा, और पराए मुख के द्वारा इन लोगों से बातें करूँगा** ... (22) इसलिये **अन्य भाषाएँ विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिये चिह्न हैं**

- पिन्तेकुस्त के दिन यह हुआ था। प्रेरितों के काम 2:4-11

2. आप में वास करनेवाले पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु से प्रार्थना करने की भाषा।

1 कुरिन्थियों 14:2 क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु **परमेश्वर से बातें करता है;** इसलिये कि उसकी बातें कोई नहीं समझता, क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

1 कुरिन्थियों 14:4 जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही **उन्नति करता है।**

यहूदा 20 भी यही बात कहता है : पर हे प्रियो, तुम **अपने** अति पवित्र विश्वास **में उन्नति करते हुए** और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए,

1 कुरिन्थियों 14:14-15 इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ, तो **मेरी आत्मा प्रार्थना करती है** परन्तु **मेरी बुद्धि काम नहीं देती।** अतः क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा; मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा।

रोमियों 8:26-27 इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है : क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु **आत्मा आप ही ऐसी *आहें भर भरकर,** जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिये विनती करता है; (27) और मनों का जाँचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि **वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है।** (*यूनानी शब्द का शाब्दिक अर्थ है : आह भरना, बुदबुदाना, या दुःख के साथ मूक प्रार्थना करना)

यह बहुत आवश्यक और महत्वपूर्ण वरदान है, और इसी लिए पौलुस कहता है :

> **1 कुरिन्थियों 14:18** मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सबसे अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ।
>
> **1 कुरिन्थियों 14:5** मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो

और आप यह कर सकते हैं! स्मरण रखें **:** वे बोले और पवित्र आत्मा ने **उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी।** (प्रेरितों के काम 2:4) **आपको केवल यह करना है :** अपना मुंह खोलें तथा हवा अपने स्वर तंत्रिका पर लाएं पर अँग्रेज़ी या अपनी मातृ भाषा में होने से इनकार कर दें। पवित्र आत्मा तुम्हें **बोलने की सामर्थ्य देगा,** आपको प्रार्थना करने की भाषा देगा।

3. अनुवाद सहित भविष्यवाणी के शब्द

1 कुरिन्थियों 14:5 मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो परन्तु इससे अधिक यह चाहता हूँ कि भविष्यद्वाणी करो : क्योंकि यदि अन्य भाषाएँ बोलनेवाला **कलीसिया की उन्नति के लिये अनुवाद न करे** तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कर है।

1 कुरिन्थियों 14:26-28 इसलिये हे भाइयो, क्या करना चाहिए? **जब तुम इकट्ठे होते हो,** तो हर एक के हृदय में भजन या उपदेश या अन्य भाषा या प्रकाश या **अन्य भाषा का अर्थ बताना** रहता है। सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना चाहिए। (27) **यदि** अन्य भाषा में बातें करनी हों तो दो या बहुत हो तो तीन जन बारी-बारी से बोलें, और **एक व्यक्ति अनुवाद करे।** (28) परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला **कलीसिया में शान्त रहे,** और अपने मन से और परमेश्वर से बातें करे

❖ पतरस का सन्देश :

प्रेरितों के काम 2:14-18 तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा, ... **यह वह बात है**, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी : 'परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि **मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा,** और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ **भविष्यद्वाणी करेंगी**, और तुम्हारे जवान **दर्शन देखेंगे**, और तुम्हारे पुरनिए **स्वप्न देखेंगे**। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उँडेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे। (प्रेरणा पा कर बोलेंगे)

प्रेरितों के काम 2:33, 37-39 (33) इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और **पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी,** उसने यह उंडेल दिया है जो तुम **देखते और सुनते हो**। (37) तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, "हे भाइयो, **हम क्या करें?**" (38) पतरस ने उनसे कहा, "**मन फिराओ,** और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से **बपतिस्मा ले**; तो **तुम** पवित्र आत्मा का दान **पाओगे**। (39) क्यों कि **यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।"**

प्रेरितों के काम 4:8 तब पतरस ने **पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर** उनसे कहा,

प्रेरितों के काम 4:31 जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहाँ वे इकट्ठे थे हिल गया, और **वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए,** और परमेश्वर का वचन हियाव से **सुनाते रहे।**

प्रेरितों के काम 4:33 प्रेरित **बड़ी सामर्थ्य** से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब **पर बड़ा अनुग्रह** था।

प्रेरितों के काम 6:3 इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और **बुद्धि से परिपूर्ण हों**, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें।

सेवकों को या सेवा कार्य के लिए किसी को चुनने में निर्देश ये थे कि वे “आत्मा से परिपूर्ण हों।” यह अभिषेक होना ज़रूरी है, जैसा निर्गमन 30:22-23 और आगे बताया गया है।

> **प्रेरितों के काम 6:5** . . . . उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो **विश्वास और पवित्र आत्मा** से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस, और पुरखुरुस, और नीकानोर, और तीमोन, और परमिनास, और अन्ताकियावासी नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया।
>
> **प्रेरितों के काम 6:8** स्तिफनुस **अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर** लोगों में बड़े-बड़े **अद्‌भुत काम और चिह्न** दिखाया करता था।

❖ अन्य लोगों **पर** पवित्र आत्मा का उतरना

- सामरिया में फिलिप्पुस

  प्रेरितों के काम 8:4-6 जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे; और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और **जो चिह्न वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।**

  प्रेरितों के काम 8:12 परन्तु जब उन्होंने **फिलिप्पुस का विश्वास किया** जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का **सुसमाचार** सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, **बपतिस्मा लेने लगे।**

  प्रेरितों के काम 8:14-17 जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने **परमेश्वर का वचन मान लिया है** तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि **पवित्र आत्मा पाएँ।** क्योंकि **वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था;** उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने **उन पर हाथ रखे** और **उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।**

- शाऊल का मन परिवर्तन : प्रेरितों के काम 9:17

  तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और **उस पर अपना हाथ रखकर कहा,** “हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिससे तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर **दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।”**

- कुरनेलियुस का मन परिवर्तन : प्रेरितों के काम 10:44

  पतरस ये बातें कह ही रहा था कि **पवित्र आत्मा** वचन के सब **सुननेवालों पर उतर आया।** और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी **पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है।** क्योंकि उन्होंने उन्हें भाँति भाँति की भाषा **बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना।** इस पर पतरस ने कहा, “क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?” और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे।

- इफिसुस में पौलुस : प्रेरितों के काम 19:1-6

जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे प्रदेश से होकर इफिसुस में आया। वहाँ कुछ चेलों को देखकर उनसे कहा, **"क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?"** उन्होंने उससे कहा, "हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।" उसने उनसे कहा, "तो फिर तुम ने किसका बपतिस्मा लिया?" उन्होंने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा।" पौलुस ने कहा, "यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।" यह सुनकर **उन्होंने** प्रभु यीशु के नाम में **बपतिस्मा लिया। जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।**

- पौलुस की शिक्षा :

2 तीमुथियुस 3:5 बताता है : वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर **उसकी शक्ति को न मानेंगे**; ऐसों से परे रहना।

❖ निश्चय ही हम केवल **"भक्ति का भेष"** धारण **करना नहीं चाहेंगे**, और न ही पवित्र आत्मा की परिपूर्णता से **सामर्थी किए जाने का इनकार करना** चाहेंगे, जो बपतिस्मा के साथ और पवित्र आत्मा के हम **पर उतर** आने से आता है।

यदि हम ऐसा करते हैं .... तो हम पवित्र आत्मा को, और जो कुछ वह कर सकता है और हमारे द्वारा करना चाहता है, **उस बुझाते हैं।**

1. 1 थिस्सलुनीकियों 5:19 आत्मा को न **बुझाओ।**

❖ हम पवित्र आत्मा का **इनकार करके** या **"न"** कहकर उसे बुझाते हैं। यदि हम आगे बढ़कर पाप को "हाँ" कहते हैं, तो हम न केवल उसे **बुझाते** हैं बल्कि उसको शो**कित** भी करते हैं।

2. परमेश्वर के पवित्र आत्मा को **शोकित** मत **करो**, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है। इफिसियों 4:30

❖ यदि हम पवित्र आत्मा के बपतिस्मा द्वारा सामर्थी किए जाने का इनकार करते हैं तो अपने जीवन में **आत्मा का फल** लाना बहुत कठिन हो जाता है, हो सकता है कोई फल यहाँ वहाँ कभी कभार दिखाई दे।

गलातियों 5:21-26 पर **आत्मा का फल** प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, 23 नम्रता, और संयम है;

- हमारे जीवन में फल की बहुतायत आत्मा की परिपूर्णता का चिह्न है।
- अगले दो पद आत्मा के फल का पूरा लाभ उठाने के लिए **आवश्यक योग्यताओं को बताते** हैं।

(24) और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने **शरीर को** उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत **क्रूस पर चढ़ा दिया है।** (25) यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो **आत्मा के अनुसार चलें भी।**

यही **आत्मा के वरदानों** के लिए भी सच है। उन्हें क्रियान्वित करने के लिए – पवित्र आत्मा के बपतिस्मा – पवित्र आत्मा की परिपूर्णता **आवश्यक है।**

1 कुरिन्थियों 12:7-11 किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिये हर एक को **आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।** (8) क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा **बुद्धि की बातें** दी जाती हैं, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार **ज्ञान की बातें।** (9) किसी को उसी आत्मा से **विश्वास,** और किसी को उसी एक आत्मा से **चंगा करने का वरदान** दिया जाता है। (10) फिर किसी को सामर्थ्य के काम करने की शक्ति, और **किसी को भविष्यद्वाणी की,** और किसी को **आत्माओं की परख**, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। (11) परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है।

- पवित्र आत्मा का अभिषेक इन वरदानों को हमारे जीवन में सामर्थ्य प्रदान करता है।

एक समर्पित जीवन के लिए यही सब चाहिए ... आपकी योग्यता नहीं :
2 कुरिन्थियों 12:9 पर उसने मुझ से कहा, “मेरा **अनुग्रह** तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी **सामर्थ्य** निर्बलता में सिद्ध होती है।” इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा कि मसीह की **सामर्थ्य** मुझ **पर** छाया करती रहे।

- जब हम कमज़ोर या असक्षम होते हैं, और हम यह जानते और इसे स्वीकार करते हैं; पर फिर भी हम उसकी आज्ञा मानने के लिए अपने विश्वास का कदम बढ़ाते हैं, तो उसका अनुग्रह या सामर्थ्य उस कार्य को करने और पूरा करने के लिए हम **पर** उतर आता है जो हम नहीं कर सकते थे।
- यह पद मुझे इस विचार की ओर ले जाता है कि पवित्र आत्मा का नाम ... अनुग्रह है।

❖ पवित्र आत्मा को ग्रहण करना

प्रेरितों के काम 2:37-39 पतरस का सन्देश सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, “हे भाइयो, **हम क्या करें?** पतरस का उत्तर आज भी हमारे लिए सच है :

1. **मन फिराओ** – अविश्वास से विश्वास करने की ओर फिरना

   जब पाप निकट आए तो परमेश्वर की ओर फिरें — अपनी पीठ पाप की ओर कर लें और प्रभु यीशु के साथ चल पड़ें।

2. **बपतिस्मा लो** – यदि आपने ऐसा किया है; तो अपने आपको यीशु और उस सेवाकार्य के प्रति जो उसने आपको सौंपा है पुनः समर्पित करें। “अपने शरीरों को जीवित ... बलिदान करके चढ़ाओ।” (रोमियों 12:1-2) रोज़ सुबह।

- परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहकर सेवा करने और उसकी आज्ञा मानने का दृढ़ संकल्प लें।
- प्रभु यीशु से विनती करें कि वह पवित्र आत्मा में आपका अभिषेक करे/ आपको परिपूर्ण करे/ आपको बपतिस्मा दे।

- परमेश्वर के वचन//उसके वायदे पर भरोसा रखते हुए विश्वास से मांगें :

  जब तुम ...अपने बच्चों को **अच्छी वस्तुएँ** देना जानते हो, तो **स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।"** लूका 11:11-13

3. और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो **तुम** पवित्र आत्मा का दान **पाओगे**। (39) क्योंकि **यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।"**

यदि पहले आपने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाया है और वह आप पर आया है ... तो

इफिसियों 5:18-21 आपके लिए है

दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, [दूसरे शब्दों में, अपने आपको अन्य किन्हीं आत्माओं के हाथों में न सौंपो] पर **आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ** (वर्तमान काल, कर्मवाच्य, आदेशात्मक, जिसका अर्थ है – **निरंतर परिपूर्ण होते जाओ**)।

- एक आरम्भिक परिपूर्ण होना या पवित्र आत्मा का बपतिस्मा तो होता है लेकिन दिन प्रति दिन आत्मा से निरंतर परिपूर्ण होते रहना भी अवश्य होना चाहिए।
- प्रति दिन प्रातः काल को पहला काम परमेश्वर से बातचीत करना का करो और इस बात को अपनी प्रार्थना का भाग बना लें कि आप अपने दिन को और अपने आपको प्रभु के हाथों में और उसकी सेवा के लिए अर्पित करें।
- प्रभु यीशु से प्रार्थना करें कि वह आपको पवित्र आत्मा में नए सिरे से बपतिस्मा दे। और आत्मा में प्रार्थना करने में कुछ समय बिताएं।
- पूरे दिन अपने मन में प्रार्थना करने की, और जब आप अकेले हों तो मुँह खोलकर प्रार्थना करने की आदत बना लें।।

(19) और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। (20) और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। (21) मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो।

हाँ प्रभु! तेरी महिमा के लिए।

आमीन